सौ मेरे अनेक कार्य सिद्ध है जायेंगे प्रथम तौ यह मइया–बाबा गोपी–ग्वाल सबके चित्त कू धैर्य बंधा आयेगौ द्वितीय सबकौ संदेश मोकू लायकै सुनाय देगौ और सबसौ प्रमुख बात तौ ये है कि जब यह प्रेम की खान ब्रज में जायेगौ तौ वहाँ सौ जब लौट के आयेगौ तौ यह अवश्य प्रेमी बन जायेगौ। तौ कोई ऐसौ उपाय करकै मैं या उद्धव कू ही ब्रज में भेज दउँ।

उद्धव जी– जय आदि–अनादि उपाधि रहित, जय शेष–अशेष तमेष उदय,
दयतार अधार अधीर धरा, सोई शाश्वत ब्रहम अवतार उभय,
भय भंजन नाम सो पूर्ण काम सखा बहु श्याम ब्रजेश विजय,
जय सच्चित आनंद रूप विभोर सब बोलो प्रभु मथुरेश की जय।

हे यदुनाथ! ये मैं कहा आश्चर्य की बात देख रह्यौ हूँ, आपकौ मुख कमल उदास है नैनन में अश्रुप्रपात है रह्यौ है। मैं सब कछु सहन कर सकूँ हूँ पर तिहारौ उदास मुख मोपै नाय देखौ जाय।

छोड़ौ प्यारे उदासी मैं तुमकूँ समझाउँ
तुम चाहौ तो गगन सौ तोर तरईया लाउँ।

ठाकुर जी–(गीत) उधौ! मोहे ब्रज विसरत नाहीं–उधौ मोहे ब्रज विसरत नाहीं।

भैया उद्धव तुमकू कहा बताउ मैं तौ ब्रज सौ आयकै या मथुरा में व्यर्थ के राजकाज के झंझटन में फंस गयौ हूँ। मेरे बिना समस्त ब्रजवासिन की ब्रजगोपिन की कहा दशा होयेगी।

मैं निसिदिन व्याकुल रहत तन मन रहत उदास
नींद ना जाने कित गई भूख लगै ना प्यास।

उद्धव मैं मथुरा में दुखी हूँ और समस्त ब्रजवासी गोकुल में रोए रोए कै अपने आप कू कष्ट दे रहे है। अब मैं कहा करूँ

मैं इतकू दुखिया फिरू गोपी उतै अधीर
कैसे सुरझे समस्या करो कछु तदवीर।

उद्धव जी–तौ भगवन् मोकू आदेश करौ मैं कहा कर सकूँ।

ठाकुर जी–उद्धव यदि तुम कर सकौ तौ मेरे लिए इतनौ करौ

उधौ ब्रज कू गमन करौ मेरे बिना विरहनी गोपिका तिन के दुख हरौ।

प्रिय तुम मेरी ओर सौ ब्रज में चले जाओ और जायकै समस्त ब्रजवासिन के दुख कौ हरण करौ।

उद्धव जी–भगवन् कैसे, मोए कहा करनौ है वहाँ जायकै।

ठाकुर जी– भैयया उद्धव!

योग ज्ञान प्रबोध सबनकू जो सुख पावे नार
पूरन ब्रहम अलख पर छोकर डारें मोहे विसार।

तुम ब्रज में जाओ और समस्त ब्रजवासिन कू योग की युक्ति और ब्रहमज्ञान कौ उपदेश करौ कि यासौं वो मोकू भूल जायें। जब वो मोकू भूल जायेंगी तो मोहू कू उनकी याद नही आयेगी।

उद्धव जी– वाह सखा वाह! खूब कही गोपिन की अरे वे पढ़ी ना लिखी गॉव की गंवारिन अरे बिनकू समझावौ मेरे बांयें हाथ कौ खेल है।

गोपी निपट गंवार है मोपै ज्ञान अपार